तिरंगे का रहस्य

तिरंगा ध्वज भारत की स्वतंत्रता का प्रतीक है जिसको हम हर वर्ष १५ अगस्त के दिन बड़े सन्मान के साथ फहराते हैं क्योंकि इसी दिन हमारा प्यारा भारत देश अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ । यह स्वतंत्रता और राष्ट्रीय अखंडता के साथ साथ स्वंत्रता सेनानियों के बलिदान का प्रतीक है ।

तिरंगे के तीन रंगों का अपना विशेष अर्थ है : केसरिया त्याग, साहस और बलिदान का प्रतीक है , सफ़ेद शांति और पवित्रता का प्रतीक है जिसमें सफ़ेद पट्टी पर बने चक्र को धर्म चक्र कहते हैं और हरा धरती की हरियाली और सम्पन्नता का प्रतीक है ।

ये तीनों रंग मिलकर देश के गौरव का प्रतीक बनते हैं और एकता व भाईचारे के संदेश के साथ, प्रेमपूर्वक ,शांतिपूर्ण जीवन जीने का ज्ञान भी देते हैं ।

अब चलें इसका अध्यात्मिक अर्थ भी समझते हैं जिसका स्पष्टिकरण वर्तमान समय शिव परमात्मा के साकार माध्यम ब्रह्मा के द्वारा हुआ ।

शिवलिंग पर तीन लाइनें दिखाई हैं पहले इसका आध्यात्मिक अर्थ समझते हैं :

यह किसका प्रतीक है ? तीनों लोकों का त्रिलोकीनाथ (तीनों लोकों को जानने वाला अधिपति मालिक) इसमें त्रिकालदर्शी (तीनों कालों को जानने वाला) , त्रिमूर्ति (त्रिदेव) , त्रिनेत्री (ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला)... सब आ गया। इस लोक का भी नाथ, बीच में जो है याने

सूक्ष्मवतन में जो त्रिदेव हैं उनका भी नाथ । जो इस रहस्य को जानता है वे बन जाते हैं त्रिलोकीनाथ बच्चे त्रिलोकीनाथ के त्रिलोकी अर्थात सारे ज्ञान को जानने वाले और भारतवर्ष का झंडा भी उसी में ही है। बीच में चक्र है.... चक्र कौन है ? वो "शिव बाबा बिंदु"।

अशोका चक्र

परमपिता परमात्मा शिव

नीचे कौनसा रंग आता है - "हरा" मतलब यह रंगीन दुनिया,

सतयुगी दैवी दुनिया

बीच में कौनसा रंग आता है "सफेद" सूक्ष्मवतन

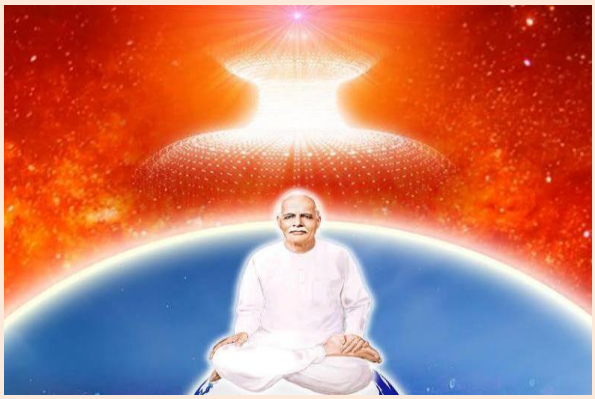

फिर "केसरी" अर्थात परमधाम का रंग है ।

सब कुछ उसमें ही है... हरा रंग क्यों बोलते हैं हरियाली । धरती पर पेड़ पौधे उगते हैं तो हरियाली है, पेड़ पौधे सब प्रकृति की सुंदरता बोलते हैं । बीच में सूक्ष्मवतन और ऊपर केसरी क्योंकि परमधाम ऐसे रंग का है। इसलिए इसको तीन रंगा "तिरंगा" बोलते हैं ! और बीच में चक्र तो कौन बैठा है "मेरा बाबा" जो निराकार ज्योतिबिंदु स्वरुप है । सब जुड़े हुए हैं ।

ड्रेस पर तिरंगे का पट्टी क्यों लगाया है ? इसमें पूरा ज्ञान समाया है, जब शुरुआत थी तो बैज में ज्ञान समाया था ।

अंतिम है तो ड्रेस में ज्ञान समाया है । जो आत्मायें शिव की शक्ति बनके विशेष भारत देश को और सामान्य रूप से पूरे विश्व को विकार रूपी रावण की परतंत्रता से मुक्ति दिलाती है उनका ही गायन भारतमाता शिवशक्ति अवतार के रुप में होता है ।

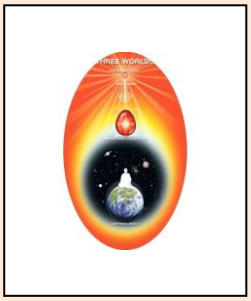

भारत माता शिवशक्ति अवतार

आत्मा रूपी सीता अथवा सजनी को पांच विकार रूपी रावण ने आधा कल्प से अपनी शोक वाटिका में गुलाम बना के रखा है जिसके कारण ही आज सभी आत्माएं इन विकारों के चंगुल में फंस पाप कर्मों में अलिप्त होकर उदास एवं दुखी हैं और अपने प्रियतम राम एवं साजन से उम्मीद की आश में जन्म जन्मान्तर से पुकार रही हैं कि आकर इनसे मुक्ति दिलायें । तो अब संगमयुग में वही पतित पावन परमपिता शिव परमात्मा अथवा शिव राम अपने भक्तो, सजनियों, सीताओं एवं पार्वतियों की पुकार सुनकर इस रावणराज्य रूपी शोकवाटिका से मुक्ति दिलाने, अपने घर परमधाम वापस ले जाने तथा स्वर्गरूपी अशोक वाटिका में स्थानान्तरण करने परमधाम से पधारे हैं । इस कलियुगी दुःखधाम से अथवा ५ विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से मुक्त होना ही सच्ची स्वतंत्रता है । अंग्रेज़ छोड़ कर चले गये अथवा देश का बँटवारा होने से क्या हम स्वतंत्र हो गये ? स्वतंत्र होता है मन से, बुराइयों से । जो इन सब चीजों से मुक्त है वही सच्चा भारतवासी है और सही मायने में स्वतंत्रता दिवस मना सकता है । जो अपनी कमी कमजोरियों व बुराइयों पर जीत पाकर बैठा है, अपने कर्मेन्द्रियों की लगाम अपने हाथों में लेकर कर्मेंद्रियजीत होकर बैठा है उसे ही सच्चा नागरिक और स्वतंत्रता दिवस मनाने का सच्चा अधिकारी कह सकते हैं । पूरे भारत को भ्रष्टाचार व बुराइयों से आज़ाद करने वाले ही सच्चे सच्चे भारतवासी रूहानी मिलिट्री हैं ।

आज देश मुसलमान और अंग्रेज़ फिरंगियों के गुलामी से तो मुक्त हो गया परन्तु अपने भीतर छिपे ५ विकार रूपी शत्रु का गुलाम बनता चला आया । इस कारण रामराज्य तो नहीं आ पाया उलटे रावण राज्य का विस्तार होता गया । यह सुन्दर दुनिया स्वर्ग से नरक तुल्य बन गया । तो अब सभी आत्माओं को बुराईयों से मुक्त कराने की सच्ची सेवा करनी है । यही सच्ची स्वतंत्रता दिवस होती है और वही सच्चा राष्ट्रीय गान गाते हैं ।

राष्ट्रीय ध्वज के सामने भारत माता को इन ५ विकार रूपी फिरंगियों से मुक्ति दिलाने का प्रण लें जिससे कि इस धरा पर पुनः रामराज्य स्थापित हो जायें । सभी दुःख, रोग, शोक से मुक्त हो जायें , चारों तरफ खुशहाली , शान्ति, सम्पन्नता का माहौल बनकर यह धरा नरक से स्वर्ग बन जाये । यही संकल्प करना है कि मैं भारत में ज्यादा से ज्यादा संख्या को रावण की जंजीरों से छुड़ाउंगा । यही एक सच्चा भारतवासी नागरिक का कर्तव्य है ।

अंत में ईश्वरीय सन्देश यही है "अपने को ज्योति बिंदु आत्मा समझ अपने प्यारे निराकार ज्योतिबिंदु स्वरुप शिव परमात्मा को याद करने से आत्मा पावन बनेगी, दुःख के सभी बंधन समाप्त हो जायेंगे, पाप कर्म नष्ट हो जायेंगे, सजाओं से छूट जायेंगे, ख़ुशी में रहेंगे, कभी थकेंगे नहीं, मुक्ति जीवनमुक्ति मिलेगी याने भविष्य में आने वाली स्वर्गीय दुनिया में सुख शांति का वर्सा पायेंगे अथवा परमधाम में मुक्त अवस्था को प्राप्त करेंगे" ।

ओम शांति